चतुर्थ अध्याय :

"विवेच्य नाटकों में चित्रित नारी जीवन"

चतुर्थ अध्याय - ' विवेच्य नाटकों में चित्रित नारी जीवन '

प्रस्तावना :

भारतीय नारी जीवन में हमेशा उत्थान - पतन होता रहा है। भारतीय समाज में उसकी स्थिति दोनों छोरों को छूती है। वह पुजिता भी है और उपेक्षिता भी है। डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश ' कहते हैं कि - " प्रारंभ में नर और नारी सामानाधिकारी थे। कार्य का विभाजन था किंन्तु नारियाँ पुरूषों की भांति स्वतंत्र थी । तत्कालीन समाज का उन पर कोई बन्धन नही था। किन्तु सभ्यता के विकास के साथ - साथ पुरूषों में स्वार्थपरता की भावना का उदय हुआ। अपने उन्मुक्त जीवन में उसने नारी को बाधक पाया। अतः नारी सामाजिक बंधन में जकड दी गई । समाज ने नियम बनाये और नारियों की स्वतंत्रता छीन ली। उन्हें घर की चहारदीवारी में कैद कर लिया गया। उनका कार्यक्षेत्र सीमित हो गया और पुरुषों का कार्यक्षेत्र विस्तृत फलक पर फैल गया। नारियाँ पुरुषों के अधीन हो गई, उन्हें पुरूषों के अनुकूल आचरण करने के लिए विवश किया गया। कालान्तर में नारियाँ स्वतंत्र भी हुई। रामायण युग इसी का प्रतीक है किन्तु पुनः वे सामाजिक नियमों में बाँध दी गई।"[1] प्राचीन काल से पुरूष नारी पर अधिकार जमा रहा है। उसे समय - समय पर बंधनों में डालकर अपने अधीन रखने का प्रयास किया गया है। पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी को हमेशा दयनीय जीवन व्यतीत करना पड़ा है।

वैदिक काल में नारी सम्मान के सर्वोच्च शिखर पर थी । वैदिक काल नारी की दृष्टि से चरमोन्नति का काल रहा है । इस संदर्भ में डॉ.रामसुंदर लाल का विचार दृष्टव्य है - " वैदिक काल में नारियाँ केवल पति की जीवन - संगिनी ही नहीं, अपितु गृहस्वामिनी और पति के साथ धार्मिक तथा आर्थिक कार्यों में समान रूप से भागीदार थीं।"[2] इस काल में नारी को सम्मान के सर्वोच्च शिखर पर बिठाया गया है। वैदिक काल में नारी को देवी के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है, जिसकी वजह से उसे श्री, शक्ति आदि कहा जाता है। इस कालखंड में मातृसत्ताक पद्धति के कारण नारी को समाज में महत्वपूर्ण स्थान था।

रीतिकाल में नारी की दशा दयनीय बन गयी थी, सतीप्रथा विधवाओं का केशवपन आदि कई तरह के बंधन में डालकर घर की चहारदीवारी में उसे बंद कर दिया था। रीतिकाल में स्त्री को भोग्या के रूप में देखा जाने लगा। रीतिकाल में नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय थी ।

आधुनिक काल में स्त्री शिक्षा, औद्योगिक क्रांति के कारण नारी जीवन में काफी परिवर्तन आ गया। आधुनिक काल के नारी - जागरण में नारी - शिक्षा नारी - समुदाय को उन्मुक्त करने में सफल रही है। शिक्षा के अभाव के कारण नारी पुरूषों के अधीन थी। डॉ.रामेश्वरनारायण 'रमेश' के मतानुसार -" नारियों में शिक्षा का ही अभाव था जिस कारण

वे पुरूष वर्ग के समक्ष नतमस्तक थी। किन्तु जैसे ही शिक्षा का प्रचार हुआ प्रायः नारियाँ शिक्षित हुई और स्वतंत्र भी। शिक्षित होकर नारियाँ दूसरी भाषाओं के साहित्य के संबंध स्थापित कर सखी और फिर उनकी बातों को ग्रहण किया। विदेशों में राष्ट्रीयता की भावना भारत की अपेक्षा पहले से ही वर्तमान थी। उनके संपर्क में आने पर भारतीय नारियाँ भी राष्ट्रीय - भावनाओं से संचलित हुई।''[3] शिक्षा का प्रचार और प्रसार होने से नारी जीवन के विभिन्न बंधनों से मुक्त होने लगी। शिक्षा - सुधार के कारण नारी भी पुरूष के समान समाज के विभिन्न क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगी।

आधुनिक युग में शिक्षा जागरण के कारण भारतीय नारी जीवन की दिशा बदल गयी। नारी शिक्षा के कारण स्वतंत्र हुई। इसके परिणामस्वरूप नारी स्वच्छंद जीवन जीने लगी। डॉ.मानचन्द खंडेला के मतानुसार - '' नारी स्वतंत्र होने के स्थान पर पहले से अधिक घुटन व स्वयं को भ्रमित महसूस कर रही है। अधिक आधुनिक प्रगतिवादी व स्वतंत्र कहीं जानेवाली महिलाएँ सिगरेट व शराब पीने, नाइट क्लबों में जाने, अविवाहित रहने, जरा - सी बात पर विवाह विच्छेद कर लेने, बच्चों से परहेज करने, विवाहेत्तर यौन संबंधो की ओर प्रवृत्त होने, शरीर का खुला प्रदर्शन करने की मानसिकता से ग्रसित होती जा रही हैं।''[4] पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करने पर भारतीय नारी स्वच्छंदी एवं उच्छृखंल बनीं। समग्र दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय नारी - जीवन में हुआ उत्थान - पतन का असर हिंदी नाटकों में दिखाई देता है।

भारतीय समाज जीवन में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यो, रूपों और स्थितियों के अनुरुप नारी के विभिन्न रूप भारतीय साहित्य में चित्रित हैं।

विद्वानों द्वारा प्रतिपादित नारी के विविध रूपों के रूपाधार इस प्रकार है -

4.1 नारी के विविध रूप -

रूपाधार -

1. आयु के आधार पर -

बाला, मुग्धा, प्रौढ़ा, वृद्धा।

2. मानसिक स्थिति के आधारपर -

प्रोषित- पतिका, खण्डिता, कलहान्तरिता, विप्रलब्धा, उत्का, वासकसज्जा, स्वाधीनपतिका, अभिसारिका।

3. **सौंदर्य के आधारपर -**

हस्तिनी, चित्रिनी, पद्मिनी, शंखिनी।

4. **अर्थिक स्थिति के आधारपर -**

उच्चवर्ग की नारी, मध्य वर्ग की नारी, निम्न वर्ग की नारी।

5. **रिश्ते - नाते संबधों के आधारपर -**

मां, बहन, पत्नी, सास, बहू, बेटी / कन्या।

6. **विवाह के आधारपर -**

विवाहित, अविवाहित, परित्यक्ता, तलाकशुदा।

7. **शिक्षा के आधारपर -**

शिक्षित, अशिक्षित।

रिश्ते - नाते संबंधों के आधार पर कुसुम कुमार के नाटकों में निम्न लिखित नारी रूप दिखाई देते हैं -

4.1.1 माता -

माता नारी का सबसे महत्वपूर्ण रूप है । माता के लिए मां, जननी आदि नामों से जाना जाता है । गोदान में प्रेमचंद जी ने कहा हैं कि -" नारी केवल माता है और उसके उपरान्त वह कुछ है, वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र है।"[5] माता अपनी संतान के प्रति अटूट कर्तव्य बंधनों के कारण वह अपना अस्तित्व बनाये रखती है । डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश ' के मतानुसार - " हिंदू समाज में नारी का मातृत्व रूप पुज्य है। पुरूष के लिए पत्नी का जितना भी अधिक महत्व हो पर मातृत्व रूप की महत्ता उसकी उपयोगिकता के समक्ष नारी के सभी रूप हैं । नारी के इस रूप के प्रति एक - एक व्यक्ति श्रध्दावान है । मां की अंचल की छाया में जो शीतलता विद्यमान है, अन्यत्र दुर्लभ है । मां का स्नेह व्यक्ति को विशेष प्रकार की शक्ति प्रदान करता है, उसकी स्नेह छाया में पलकर व्यक्ति विनम्र, शालीन होता है।" [6] मां अपनी संतान को जन्म देकर उसकी परवरिश करती है । मां की यही कामना होती है कि उसकी संतान हमेशा जीवन में सफल रहे, सुखी रहे । इसलिए वह बचपन से ही संतान पर अच्छे संस्कार करने की कोशिश करती है । मां स्वयं कष्ट उठाकर अपने संतान को सुखी रखने का प्रयास करती है । नारी मातृत्व की वेदी पर अपना बलिदान देती है, जिसके लिए त्याग ही सबसे महत्वपूर्ण बात है।

कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटकों में माता के अलग - अलग रूपों का चित्रण किया है। यथ:

4.1.1.1 आदर्श माता -

आदर्श माता अपना धर्म निभाती है । जो माता अपने बच्चों की परवरिश और सुसंस्कांरित करती है, वह आदर्श माता होती है । आदर्श माता अपनीं संतानों के लिए हमेशा मार्गदर्शिका होती है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति', नाटक में मेनका की

मां मिसिज जोशी आंटी आदर्शमाता के रूप में चित्रत है । जोशी आंटी पति की मृत्यु के बाद धीरज बाँधकर दोनों बेटों को सुसंस्कांरित, सुशिक्षित बनाती है । जोशी आंटी प्राध्यापिका है । जोशी आंटी का आदर्श रूप निम्न वार्तालाप से स्पष्ट होता है -

" अनू - छोड यार ! अंटी बहुत डैडीकेटिड टीचर हैं।

मीना - आंटी तो एकदम जीनियस हैं ।

मेनका - पर ! जीनियस की बेटी क्या करें ? उसे भी तो कुछ बनना है ?

थैलमा - करैक्ट ! जीनियस की बेटी को जीनियस ही बनना हैं ।

मेनका - जीनियस बना नहीं जाता थैलमा, वह सिर्फ हुआ जाता है।" [7] इससे यह स्पष्ट होता है कि जोशी आंटी तो आदर्श माता ही है, उनकी बेटी मेनका भी एक आदर्श माता की आदर्श बेटी है। मां अपनी संस्कारों से अपने संतानों को बहुत ऊंचे स्थानों तक पहुंचा सकती है।

' सुनो शेफाली ' नाटक में शेफाली की मां आदर्श माता के रूप में चित्रित है। शेफाली की मां अपने पति बीमार होने के कारण अकेली घर संभालती है। बेटियों को शिक्षा देने के लिए स्वयं कष्ट उठाती है। शेफाली और उनकी बहनों को शिक्षा लेते समय किसी भी बात की कमी नहीं आने देती। स्वयं कष्ट उठाकर अपनी संतानों की परवरिश करती है। शेफाली - बकुल का प्रेम संबंध होने के कारण मां अपनी जात - बिरादारी का विचार न करते हुए शेफाली - बकुल के अंतर्जातीय विवाह के लिए तैयार होती है। एक आदर्श माता होने के कारण शेफाली की मां पूरे परिवार की जिम्मेदारी निभाने में सफल हुई है।

कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में आदर्श माता का एक ऐसा रूप पाठकों के सामने रखा है, जो पाठक नहीं भूलते।

4.1.1.2 वात्सल्यमयी माता :

मां का वात्सल्य प्रेम अपनी संतान के लिए बहुत बडी देन होती है । वात्सल्यमयी माता के संबंध में डॉ.रामेश्वरनारायण 'रमेश' का विचार दृष्टव्य है - " जन्म से लेकर जब तक मां जीवित रहती है, वह अपनी संतान को प्रेम से सिक्त रखती है। बचपन में तो मां पालन - पोषण करती ही है, बडे होने पर भी वह अपनी संतान की देख - रेख करती है। वह सदा यही कामना करती है, कि उसकी संतान सुखमय जीवन - यापन करे, इसके लिए वह हर संभव प्रयत्न करती है। अपनो पुत्री के लिए वह अच्छे वर खोजती है और पुत्र के लिए सुशील कन्या। यह सब उसके वात्सल्य प्रेम का ही फल है।" [8] नारी में ममता या वात्सल्य की भावना सहज, स्वाभाविक और प्राकृतिक है। उसे उसके व्यक्तित्व से अलग नहीं किया जा सकता। वात्सल्य का भाव नारी का प्राकृतिक गुण है। नारी के वात्सल्यमय रूप का समय

और परिस्थिति से अधिक संबंध न होकर स्वयं अपने रक्त से संबंध है। कुसुम कुमार ने वात्सल्यमयी माता के रूप का चित्रण अपने नाटकों में किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक में शेफाली की मां वात्सल्यमयी माता के रूप में चित्रित है। शेफाली की मां तीन संतानों की मां है । वह एक सहज वत्सला एवं त्यागमयी जननी है। उसने अपनी बेटियों को लाड़-प्यार में पाला है। वात्सल्य प्रेम के कारण अपनी बेटी शेफाली का अंतर्जातीय विवाह करने के लिए तैयार होती है। घर में सभी को प्यार से दुलारती है। शेफाली लफंगे समाजसेवक बकुल के साथ विवाह करने के लिए इंकार कर देती है। शेफाली की मां प्यार से शेफाली के सिर पर हाथ रखती हुई कहती है - " शेफाली ... शेफाली बच्ची। .... चल, घर चल! सब ठीक हो जायेगा।" [9] शेफाली की मां वात्सल्य प्रेम की साक्षात् प्रतिमूर्ति है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक की नायिका कमला वात्सल्यमय माता के रूप में चित्रित है। वात्सल्य प्रेम के कारण कमला अपनी मनोरूग्न पुत्री नीति की सब गलतियों को समझ लेती है। नीति को पति द्वारा त्यागने पर कमला अपनी बेटी को अपने घर में ही रख लेती है। नीति कमला की नजरों में छोटी ही है। कमला का वात्सल्य प्रेम निम्न उध्दरण से अभिव्यक्त होता है - "(नीति के पास आकर प्यार से उसके बालों पर हाथ फिराते हुए) नीति बहुत प्यारा नाम है! मेरी बेटी का मन प्यारा है! नाम प्यारा है! इतने गुण हैं मेरी बेटी में भाईजी ....।" [10] नीति की मनोरूग्नावस्था में सेवा करने में ही कमला अपनी ममत्व एवं सर्वस्व का त्याग कर चुकी है। वात्सल्य प्रेम के कारण कमला अपनी पुत्री को एक क्षण के लिए भी दूर नहीं रहना चाहती। कमला का वात्सल्यमयी माता का रूप प्रशंसनीय है।

4.1.1.2 पत्नी : -

भारतीय संस्कृति में नारी को पत्नी रूप का विशेष महत्वपूर्ण स्थान हैं। नारी को 'अर्धांगिनी' कहा जाता है। भारतीय नारी अपनी पतिसेवा में अपना सुख मानती है। डॉ.घनश्याम भुतडा के मतानुसार - " नारी अब केवल रमणी या भार्या नहीं रही, वरन घर के बाहर समाज का एक विशेष अंग तथा महत्त्वपूर्ण नागरिक बनकर प्रस्तुत हुई है।" [11] विधाता ने नारी को पुरूष के पूरक रूप में बनाया है। एक - दूसरे के बिना दोनों का जीवन अधूरा है। विवाह के उपरान्त नारी पति का आधार बन जाती है। उसके सुख दुःख में साथ निभाती है। नारी एक बार जिसे वरण लेती है, आजीवन उसी के प्रती समर्पित रहती है। कुसुम कुमार के विवेच्च नाटकों में नारी का पत्नी रूप विशेष उल्लेखनीय है।

' सुनो शेफाली ' नाटक में चित्रित शेफाली की मां एक आदर्श पत्नी, पतिधर्मपरायण स्त्री रूप में प्रस्तुत है । पति बीमार होने के कारण शेफाली की मां पति की सेवा में प्रयासरत रहती है । यह निम्न वार्तालाप से अभिव्यक्त होता है -

'' शेफाली - नहीं अभी नहीं .... कुछ देर बैठूंगी .... तू जा बाबा को दवा देनी होगी ....
मिस साहेब के भी जाना ....

मां - अच्छा, चल, मैं चलती हूं । तू अपना जी शान्त कर... बस ठीक हो जायेगा।''[12] शेफाली की मां को मिस साहब के यहां नौकरी करते - करते पति की बीमारी में सेवा भी करनी पडती है । शेफाली की मां का भारतीय पारंपरिक पत्नी के रूप में चित्रण हुआ है ।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक की नायिका कमला एक परंपरागत भारतीय पत्नी के रूप में चित्रित है । पति माधोसिंह को दिल्ली में नौकरी करते समय और सेवा - निवृत्त होने के बाद अर्थाभाव के कारण घर संभालना मुश्किल होता है । ऐसी विपरीत परिस्थितियों में कमला पति के कहने पर दिल्ली छोडकर अलीगढ़ आती है। वहां विपरीत परिस्थिति में वह अपने पति और बेटी की सेवा में हमेशा व्यस्त रहती है । यह निम्न वार्त्तालाप से अभिव्यक्त होता है -

'' कमला - ठीक है बाबा, ठीक है । (नीति के पास आकर माथा सहलाते हुए) तुझे अच्छा लगा ना बस, तो फिर मेरा क्या है? तेरा मन ठिकाने पे रहे जहां, वही मैं खुश हूं ।

माधोसिंह - और हम ? हम तो जैसे हुए, ना हुए बराबर हैं । हमारे मन को क्या अच्छा लगता है, क्या नहीं, इसकी किसी को कुछ फिकर ही नहीं!

कमला - (पत्नी - सुलभ प्रेम से पास आकर) सुबह - सुबह अपनी पुजा करवाओंगे क्या? आपकी फिकर नहीं मुझे भला तो और किसकी हैं ?''[13] पति और पुत्री के सुख में अपना सुख माननेवाली कमला सचमुच भारतीय पत्नी रूप को महत्ता प्रदान करती है । पति सेवा ही अपना धर्म समझनेवाली कमला में त्यागीवृत्ति परिलक्षित होती है । एक भारतीय स्त्री पति के सुख-दुख में कैसी अर्धांगिनी बनती है, इसका जीता - जागता उदारहण कमला के चरित्र में मिलता है ।

4.1.1.3 बहन : -

भारतीय समाज में नारी के बहन रूप का महत्त्व अनन्यसाधारण है । भाई और बहन, बहन-बहन में एक नाजुक रिश्ता है । इस संदर्भ में डॉ.जे.एम.देसाई का मत दृष्टव्य है - '' सभ्यता के प्रभात काल में बहन का संबंध नगण्य था । पर सभ्यता के विकास के साथ यह मान्य हो गया । भारतीय समाज में स्त्री - पुरूष के सहज संबंध का प्रतीक 'बहन' शब्द बन गया है । बचपन का साथी बहन का स्थान महत्वपूर्ण है। बहन छोटी हो तो भाई से प्यार पाती है, बड़ी हो तो प्यार और आदर दोनों पाती है । पुरूष के ह्दय के वासनायुक्त सात्विक प्रेम पर बहन का अधिकार होता है । भाई - बहन के निश्चल प्रेम से मनुष्य कभी अध:पतित नहीं होता । आधुनिक काल में बहन भाई को सिर्फ अपनी ही नहीं देश की रक्षा हेतू भी राखी

भेजती है।'' [14] बहन - भाई, बहन - बहन में अपनत्व का भाव निहित होता है, किन्तु आज की सभ्यता ने व्यक्ति को स्वकेंद्री बनाया हैं । कुसुम कुमार ने नारी के परंपरागत पारिवारिक रूप में बहन का चित्रण किया है ।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में बहन - भाई का ।चत्रण मिलता है। प्रस्तुत नाटक में मेनका बहन के रूप में चित्रित है। मेनका का भाई बादल हादसे में कहीं खो गया है। मिसिज दानी मेनका पर बादल के खो जाने का आरोप लगाते हुए कहती है - " तुमने इतना जवान भाई खो दिया ... तुम्हारी जगह कोई भी होता तो वह इसी तरह चिड़चिड़ा मिजास रखता ... दु:ख सहने की भी एक सीमा होती है। इसके जवाब में मेनका कहती है - ये क्या है मैम ! खुद को बचाने के लिए और कुछ नहीं सूझा तो मेरे दु:ख की चादर ओढ़ ली आपने।"[15] मेनका जोशी को अपना भाई खोने का दु:ख है। अपने भाई को खोने का आरोप लगाने पर मेनका और अधिक दु:खी होती है। मेनका अपने भाई का जान - बुझकर तो संकट में नहीं डालती, मगर खुद को बचाने के लिए मेनका अपने भाई को खो बैठती है। इसलिए मेनका दु:खी रहती हे। मेनका का यह बहन का रूप अद्वितीय है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक में शेफाली के बहनों का उल्लेख मिलता है। शेफाली अपनी बहन किरन के साथ अच्छा व्यवहार करती है। एक बड़ी बहन अपनी छोटी बहन को अपने प्रेमी की पत्नी जरूर बना देगी, लेकिन स्वाभिमान, सत्व को ठेंस पहुंचाकर किसी लफंगे की कठपुतली नहीं बना देगी। शेफाली अपना स्वार्थी प्रेमी बकुल से विवाह करने के लिए इंकार कर देती है। बकुल के पिता सत्यमेव दीक्षित शेफाली की बहन किरन को अपनी बहू बनाना चाहते है। यह बात शेफाली को समझने पर वह आक्रोश व्यक्त करती हुई कहती है - " क्या ? क्या कहा अम्मा ? किरन की शादी ? बकुल से ? किसने कहा तुझसे ? उसके बाप ने ? तूने सुन लिया अम्मा ? जिस मुंह से उसने आग की यह लपटें निकाली उसे तूने ... मिट्टी का तेल दिखाकर राख क्यों नहीं कर दिया।"[16] शेफाली धोखेबाज समाजसेवक बकुल से विवाह करना नहीं चाहती। वह अपनी बहन किरन का विवाह भी बकुल से करना नहीं चाहती। परन्तु शेफाली की मां परिस्थितिवश किरन का विवाह बकुल से करा देती है। जब किरन बकुल की पत्नी बनकर शेफाली के सामने उपस्थित होती है तब शेफाली के पास बहन को आशीर्वाद देने के सिवा और कोई मार्ग नहीं रहता।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटक में चित्रित बहन का रूप देखने पर कहा जा सकता है कि सभ्यता के तौर पर बड़ी बहन अपनी छोटी बहन के लिए सर्वस्व का त्याग कर सकती है, लेकिन ' स्व ' रक्षा के लिए अपने निश्चय पर अड़िग रहना आज की सभ्यता है। जो कुसुम कुमार के नाटकों में पायी जाती है।

4.1.1.4 कन्या : -

भारतीय संस्कृति में नारीं का कन्या रूप हमेशा उपेक्षित रहा है। आधुनिक काल में शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कारण नारी पढ़ने लगी। वह अपने पिता के घर में पढ़ाई पूरी करके नौकरी भी

करने लगी। वह स्वयं कमाने लगी है। इसके परिणामस्वरूप माता - पिता का अपनी पुत्री के प्रति दृष्टिकोण बदल रहा है। विवाह पूर्व कन्या ही माता - पिता का प्रमुख आधार है। आज कल की पढ़ी - लिखी नारी शैक्षिक, आर्थिक, वैचारिक दृष्टि से जागृत हुई हैं। फलतः नारी - संबंधी परंपरागत धारणाएँ एवं मान्यताएँ बदली हुई हैं। परिवार में माता - पिता को कन्या के विवाह की आज भी चिन्ता रहती है। इस संदर्भ में डॉ.गणेश दास का विचार दृष्टव्य है - " विवाह पूर्व लगाए गए प्रतिबंध आज भी नर - नारी के व्यक्तित्व में बाधक हैं। इसलिए नर - नारी को पारिवारिक, सामाजिक क्षेत्रों में सेक्स मूलक संबंधों को लेकर अधिक संघर्ष करना पड़ता है। नारी के घर के बाहर जाने से संघर्ष का वैयक्तिक धरातल भी अधिक बढ़ा है। पारिवारिक एवं सामाजिक बाधाओं के साथ - साथ वैयक्तिक कारण भी संबंधों को बदलाव एवं संघर्ष के महत्त्वपूर्ण आधार बनें है।"[17] विवाह पूर्व प्रेम संबंध निर्माण होने के कारण नारी को पारिवारिक और वैयक्तिक धरातल पर भी उसे संघर्ष करना पड़ता है। वैयक्तिक धरातल पर उसे पुरूष वर्ग से संघर्ष करना पड़ता है। पुरूष वर्ग में अधिकांश पुरूष नारी के अज्ञान का लाभ उठाकर उसका शोषण करते हैं। नारी जिसे सर्वस्व मानकर प्रेम करती है, वही उसे धोखा देता है। यह नारी के लिए सबसे बड़ी यातना रही है। जो कन्या रूप में दिखाई देती है।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में मेनका, शेफाली और नीति कन्यारूप में चित्रित है। शेफाली और नीति को भाई नहीं। शेफाली और नीति दोनों ही अपने मां - बाप के सर्वस्व रही है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक ' ओम् क्रांति क्रांति ' की मेनका कन्यारूप में चित्रित है। मेनका की मां जोशी आंटी लेक्चरर है। मेनका अपनी मां की तरह जीनियस बनना चाहती है। मेनका कहती है - " पर जीनियस की बेटी क्या करे ? उसे भी तो कुछ बनना है ?"[18] मेनका टीचर की इंसल्ट करना नहीं चाहती क्योंकी उसकी मां भी टीचर है। मां के प्रति मेनका का आदर निम्न उध्दरण से अभिव्यक्त होता है -

" ग्रेट - ग्रेट कुछ नहीं थैलमा, पर टीचर की इंसल्ट मुझसे नहीं होगी। मम्मी भी टीचर हैं। ... टीचर की बेटी टीचर को इंसल्ट कैसे करे ?"[19] मेनका एक आदर्श कन्या के रूप में चित्रित है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक ' सुनो शेफाली ' की नायिका शेफाली कन्या के रूप में चित्रित है। शेफाली अपने माता - पिता की सबसे बड़ी कन्या है। शेफाली बकुल से प्यार करती है। शेफाली का बकुल से विवाह पूर्व प्रेम संबंध स्थापित हो जाने के कारण उसे पारिवारिक और वैयक्तिक धरातल पर संघर्ष करना पड़ता है। बकुल स्वार्थ हेतू शेफाली से प्यार करता है, अब उससे विवाह भी करना चाहता है क्योंकि बकुल को राजनीति में हरिजनों से वोट हासिल करने हैं। जब इस बात का शेफाली को पता चलता है तब वह बकुल से विवाह करने के लिए इंकार कर देती है। परिस्थितिवश शेफाली की मां को शेफाली का विवाह बकुल से करना पसंद था। क्योंकि मां को अपनी बेटी के विवाह की चिंता थी। शेफाली के पिता बीमार होने के कारण शेफाली और उसके बहनों के विवाह की जिम्मेदारी मां पर है। इसलिए शेफाली की मां शेफाली का विवाह करके अपनी

जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहती है। परंतु स्वाभिमानी शेफाली अपने परिवार और प्रेमी के विरोध में संघर्ष करके अंत तक अपने निर्णय पर अड़िग रहती है। उसका यह कन्या का रूप स्वाभिमानी, निड़र, साहसी वृत्ति का परिचय देनेवाला है।

कुसुम कुमार दवारा लिखित नाटक ' दिल्ली ऊँचा सुनती हैं में नीति कन्या रूप में चित्रित है। नीति अपने मां - बाप की इकलौती बेटी है। नीति मनोरूग्न है, इसलिए उसके पति ने उसे त्याग दिया है। पति द्वारा त्याग ने पर नीति अपने मायके रहती है। माता - पिता की इकलौती बेटी होने के कारण नीति को अपने माता - पिता से बहुत लाड - प्यार मिला है। माधोसिंह और कमला के जीवन का आधार नीति ही है। माधोसिंह को पेंशन न मिलने के कारण नीति की बीमारी और बढ़ जाती है। आखिर नीति अर्थाभाव और सरकारी तंत्र की दमन - नीती के कारण आत्महत्या कर लेती है। प्रस्तुत नाटक में नारी के कन्या रूप का चित्रण करूणा जगानेवाला और दयनीय रहा है।

4.1.5 कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित नारी के अन्य रूप -

कुसुम कुमार के नाटकों में उपरविवेचित रूपों के अतिरिक्त अन्य नारी रूप निम्नलिखित प्रकार से हैं।

4.1.5.1. विद्रोही प्रेमिका : -

नारी अबला होने के कारण प्रेम में भी उसके साथ छल कपट, धोखे बाजी, अन्याय, जालसाजी से उसे फंसाया जाता है, तब वह प्रेमिका अपना विद्रोही रूप प्रकट कर लेती है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में शेफाली विद्रोही प्रेमिका के रूप में पाठकों और श्रोताओं के सामने आती है। बकुल और शेफाली का दो साल से प्रेम संबंध है। शेफाली एक हरिजन युवती है। बकुल राजनीति में स्वार्थ हेतू साध्य करने के लिए शेफाली से विवाह करना चाहता है। एक हरिजन युवती से विवाह किया, ऐसा विज्ञापन देकर बकुल जनता से वोट मांगना चाहता है। शेफाली बकुल की इस कुटिल चाल को जानते हुए अपने विवाह के लिए इंकार कर देती है। स्वाभिमानी, सज़ग शेफाली घिनौनी राजनीति के लिए अपने पवित्र प्रेम का त्याग करना नही चाहती। वह बकुल के विरोध में विद्रोह कर बैठती है। शेफाली का विद्रोह निम्न उध्दरण से स्पष्ट होता हैं- "झूठ-अब और झूठ न बोलो बकुल ! मैं सिर्फ प्यार करना जानती थी... प्यार करती रही... मैं एक गरीब घर की हरिजन लडकी... तुमने मुझे प्यार किया... शादी भी करना चाहते हो... आय शुड बी ग्रेटफुल टू यु... आय शुड बी फेथफुल टू यू... थैंक यू व्हेरी मच... थैंक यू व्हैरी मच।"[20] शेफाली बकुल की स्वार्थनीति को जान लेने से विद्रोह करती है।

शेफाली बकुल के साथ विवाह के लिए इंकार कर देने पर, बकुल के पिता सत्यमेव दीक्षित बकुल का विवाह किरन से करने के लिए तैयार होते है। किरन शेफाली की बहन है। इस बात का पता चलने पर शेफाली अपनी मां के पास अपना विद्रोह प्रकट करती कहती है - "क्या ? क्या कहा, अम्मा ? किरन की शादी ? बकुल से ? किसने कहां तुम से ? उसके बापने ? तून सुन लिया अम्मा

? जिस मुंह से उसने आग की यह लपटें निकाली उसे तूने... मिट्टी का तेल दिखाकर राख क्यों नहीं कर दिया ? जली हुई उस राख पर चिमटे से चप्प-चप्प और कर दिया होता ! लहू-लुहान कर दिया होता उस पामर को।"[21] शेफाली के शब्दों में अंत तक विद्रोह की आग उगलती रहती है। अपना विद्रोह वह बे-बाकी के साथ प्रकट करती है।

4.1.5.2 नायिका के रूप में नारी : -

आचार्यों ने नारी के नायिका - भेद का वर्णन किया है। प्रस्तुत भेद नायिका को आधार बनाकर किये है। इसलिए नायिका भेद में वर्णित नारी के रूप आज भी हमें व्यावहारिक धरातल पर यथावत मिल सकते हैं। नायिका के बारे में डॉ.हरिशंकर शर्मा का विचार दृष्टव्य है - "प्रायः नायक की पत्नी या उसकी प्रेमिका को नायिका माना जाता है। नायिका को शील-संपन्ना, तेजमयी, प्रभावशालिनी, गरिमामयी तथा कर्तव्यती नारी होना चाहिए। नायिका होने के लिए आवश्यक है कि वह कथाविकास में महत्त्वपूर्ण योग दे, कथा का केंद्र हो, उसका व्यक्तित्व कथा-प्रसंगों पर छाया रहे, कथा की वांछित परिणति में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान हो। वह फल की भोक्ता हो तथा रचना के प्रतिपाद्य को उजागर करे।"[22] हरिशंकर शर्मा ने नायिका की परिकल्पना में नारी को विशेष महत्त्व प्रदान किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक की नायिका शेफाली है। नायिका शेफाली प्रथमतः एक भोली - भाली प्रेमिका के रूप में चित्रित है। बाद में विवाह का प्रसंग आने पर सज़ग विद्रोही नारी के रूप में प्रस्तुत होती है। अंतिम मोड़ पर नायिका शेफाली एक विद्रोही रूप में नायक का प्रतिशोध लेना चाहती है। प्रेम के झूठे जंजाल में फंसी शेफाली को पीडा, ग्लानि सहनी पड़ती है। शेफाली कहती है - "कौन लड़की नही चाहेगी कि दो साल तस सोते-जागते सिर्फ़ एक ही सपना देखने के बाद वह उस सपने को अपनी जिन्दगी की हकीकत न बना ले ? तकलीफ़ तब और भी ज्यादा होती है तब पता चले कि यह हकीकत मेरे प्रेमी के वेश में कोई फैशनेबल, मतलबी लोकसेवक है, जो घात लगाकर मुझे कहां से कहां ले आया।"[23] शेफाली बकुल को सच्चे दिल से प्यार करती थी, लेकिन बकुल की स्वार्थनीति के कारण वह विवाह के लिए इंकार कर देती है। बकुल कुटनीति में शेफाली से आगे निकालता है। बकुल शेफाली की मां की सहायता से शफाली की बहन किरन के साथ विवाह करके अपना स्वार्थ हेतू साध्य कर लेता है। नायिका शेफाली अंतिम फल की भोक्ता बन सकती थी, लेकिन बकुल की स्वार्थनीति के कारण वह विद्रोह करती है। नायिका शेफाली का कथा विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। जिससे वह नायिका के पद पर आरूढ़ है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक ' दिल्ली उँचा सुनती है ', में कमला नायिका के रूप में चित्रित है। कमला अपने पति के हर सुख-दुःख में सहभागिनी बनी हैं। नायिका कमला दिल्ली में रहते समय और दिल्ली छोड़कर अलीगढ़ में जाने के बाद पति के हर कार्य में सहयोग देती है।

माधोसिंह सेवानिवृत्त होने पर उसे कुछ दिन पेंशन मिलती है और बाद में नाहीं मिलती। पेंशन के मामले में कमला पति के लिए हमेशा प्रेरणादायिनी रही है। नायिका कमला का रूप नाटक में अद्यांत है। कथाविकास में नायिका कमला का महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। माधोंसिंह के पेंशन की रजिस्ट्री उसके मृत्यु के बाद ही मिलती है। माधोसिंह को जीवित होते पेंशन न मिलना नाटक की शोकांतिका है। प्रस्तुत नाटक में फल भोक्ता के रूप में कमला ही है। नाटक में कमला पारंपरिक भारतीय नायिका के रूप में चित्रित है। जो सुख दु:ख में अपने पति का साथ देती है।

4.1.5.3 साहसी नारी :

महिलाओं ने शिक्षा ग्रहण करने पर उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन आ गया। वह पहले चहार दीवारी में बंद रहती थी। शिक्षा के कारण अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति जज़ग रही, जिससे वह साहसी बनीं। प्रो.मानचंद खंडेला के मतानुसार - "महिलाओं के संबंध में चाहे इतनी ही दशाब्दियाँ लगी हो, लेकिन लगता है अब महिलाओं की स्थिति में भो परिवर्तन, अवश्यम्भावी-सा हो गया है। पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के आरक्षण, राज व्यवस्था में उनकी बढ़ती भूमिका, महिला संगठनों के फैलते जा रहे प्रभाव, महिला हितों के संबंध में पिछले दिनों में आये कानूनी बदलाव, पुलिस व सामान्य प्रशासन में बढ़ती जा रही उनकी भागीदारी और सबसे महत्त्वपूर्ण विचारों में आ रहे व्यापक बदलाव से तो ऐसा ही लगता है। इस बदलाव के लिए संचार साधनों, साक्षरता के प्रतिशत में हो रही वृध्दि, स्टार, एम्, जी टी.व्ही. जैसे प्रसार माध्यमों, भौतिकवाद संस्कृति, उच्च वर्ग मध्य वर्ग परिवारों की बढ़ती संख्या, स्वर्गीय इंदिरा गांधी व जयललिता की राजनैतिक हैसियत जैसे कई कारण उत्तरदायी रहे हैं।"[24] आजकल की नारी अपनी सत्व, आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अन्याय के विरोध में संघटित होकर लड़ रही है। कुसुम कुमार के विवेच्च नाटकों में साहसी नारी का चित्रण मिलता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में महिला कालेज की छात्रा मेनका, अनू, थैलमा और मीना साहसी नारी के रूप में चित्रित हैं। महिला कालेज की लेक्चरर मिसिज दानी की अनुशासनहीनता से पूरे महिला कालेज में अराजकता फैला दी है। मिसिज दानी के भ्रष्ट व्यवहार के विरोध में आवाज उठाने का कार्य प्रथम मेनका करती है। इसके उपरान्त अनू, थैलमा, मीना, मेनका को सहयोग देती है। मिसिज दानी कक्षा में जाते समय हमेशा देरी से जाती है। इस संदर्भ में मेनका साहस के साथ कहती है - "पता नहीं मैम... आप अक्सर तो लेट ही आती है।"[25] मिसिज दानी के विरोध में सभी लड़कियाँ क्रांति का नारा लगा देती हैं। इस क्लासरूम क्रांति के कारण मेनका और थैलमा को कालेज से रस्टीकेट कर दिया जाता है। मीना मिसिज दानी को धमकी देकर कहती है कि - "अब शांति स्थापित नहीं हो सकती गुरूदेव... अब तो होगी और होके रहेगी क्रांति, सिर्फ क्रांति।"[26] महिला कालेज की छात्रा साहसी नारी के रूप में प्रस्तुत नाटक में चित्रित है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक की नायिका शेफाली बकुल से दो साल से प्यार करती है। बकुल शेफाली को फंसाकर विवाह भी करना चाहता है। क्योंकि शेफाली एक हरिजन लड़की है। बकुल ब्राह्मण है। उसके पिता सत्यमेव दीक्षित प्रसिद्ध समाजसेवक हैं। बकुल के पिता ने एक साजिश रची है; जिसके द्वारा वह समाज के सामने जाकर एक हरिजन युवती से विवाह किया ऐसा विज्ञापन देकर उन्हें जनता से वोट मांगने हैं। चुनाव में जीतने के लिए हरिजन युवती शेफाली को मोहरे के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं। इसी स्वार्थनीति के लिए बकुल शेफाली को हमेशा लालच दिखाकर विवाह के लिए प्रेरित करता है। बकुल की कुटिल चाल का पता लगने पर शेफाली को हमेशा लालच दिखाकर विवाह के लिए प्रेरित करता है। बकुल की कुटिल चाल का पता लगने पर शेफाली आक्रोश व्यक्त करती हुई कहती है - "झूठ-अब और झूठ न बोलो बकुल ! मैं सिर्फ प्यार करना जानती थी... प्यार करती रही... हिसाब तो तुम लगाते रहे... और तुम्हारे घरवाले... मैं एक गरीब घर की हरिजन लडकी... तुमने मुझे प्यार किया... शादी भी करना चाहते हो... आय शुड बी ग्रेटफुल टू यु... आय शुड बी फेथफुल टू यू।"[27] शेफाली बकुल की चालबाजी का पर्दाफाश कर देती है। शेफाली अपने साहस के कारण बकुल के साथ विवाह के लिए इंकार कर देती है। एक सामान्य घर की हरिजन लडकी द्वारा बड़े समाजसेवक के पुत्र के विरोध में निर्णय लेना शेफाली का साहस ही है। शेफाली के माध्यम से लेखिका ने शेफाली जैसी युवतियों को यह मंत्र देना चाहती है कि शेफाली जैसी साहसी बने ऐसा विचार पाठकों के सामने अभिव्यक्त करती है।

4.1.5.4 त्यागमयी नारी : -

त्याग ही नारी की सबसे बड़ी देन है। नारी हमेशा पति, परिवार, समाज के लिए अपने-आपको न्यौछावर कर देती है। इसमें वह सुख भी पाती है। इस संदर्भ में डॉ.हरिशंकर शर्मा का मत दृष्टव्य है - "नारी उपभोग में नहीं उत्सर्ग में सुख पाती है। त्याग नारी की सहजवृत्ति है, बलिदान उसका चरित्र है।"[28] नारी दया, क्षमा, त्याग की मूर्ति होती है। वह अपने स्वाभिमान, अधिकार को बनायें रखने के लिए स्वयं दु:ख, दर्द, पीड़ा सहकर दूसरों के लिए आत्मसमर्पण भी करती है। कुसुम कुमार के विवेच्च नाटकों में त्यागमयी नारी का रूप दिखाई देता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में चित्रित छात्रों का त्यागीरूप विशेष उल्लेखनीय हैं। भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध में लड़ते समय मेनका और थैलमा को कालेज से रस्टीकेट होना पड़ता है। अपने कालेज जीवन का त्याग देनेवाली मेनका और थैलमा छात्र-आंदोलन में सफल होती हैं। मिसिज दानी के भ्रष्ट व्यवहार से महिला कालेज में अराजकता फैली थी। विद्यार्थियों के हित के लिए, दोनों छात्रा मेनका और थैलमा को कालेज जीवन से वंचित होना पड़ता है। इस कार्य में दोनों छात्राओं का त्यागी रूप दिखाई देता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में चित्रित शेफाली की मां त्यागमयी नारी का उत्कष्ट उदाहरण है। पति की बीमारी में पतिसेवा करना और तीन बेटियों की शिक्षा का खर्च वहन करना और उनकी परवरिश करना मां की जिम्मेदारी है। शेफाली की मां मिस साहब के यहां नौकरी करके पूरा घर अकेले संभालती है। अपने परिवार की सेवा में व्यस्त रहनेवाली शेफाली की मां का त्यागीरूप सराहनीय है। यह निम्न वार्तालाप से स्पष्ट होता है -

" शेफाली - तू इतनी सुन्न - सी क्यों पड़ गयी है? ऐसा लगता है उनकी दौलत का लालच...

मां - मुझे किसी चीज की लालच नहीं... लेकिन तुम तीनों को बारी-बारी विदा करने का तो लालच हैं।"[29] शेफाली की मां सचमुच त्याग की प्रतिमूर्ति है। वह अपने संतानों के लिए कष्ट उठाती है, स्वयं दु:खी रहकर अपने परिवार को सुखी बनाना चाहती है।

4.1.5.5 पुरूष द्वारा शोषित नारी -

पुरूष नारी का मानसिक और शारीरिक शोषण करता रहा है। नारी शोषण की कुप्रथा आज भी जारी है। सामान्यत: राजनीतिक नेता, ऑफिस में काम करनेवाले अफसर, व्यवसायी अपने अधीनस्थ काम करनेवाली महिलाओं का यौन शोषण करते हैं। विशेषत: कार्यालयीन परिवेश में यह गंदगी अधिक फैली हुई दिखाई देती है। वरिष्ठ अधिकारी अपने कार्यालय में काम करनेवाली स्त्रियों की ओर घिनौनी नजरों से देखते हैं। कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में नारी शोषण को उजागर किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में चित्रित टाइपिस्ट अलका को दफ्तर के बॉस मिस्टर ए.द्वारा दी गयी मानसिक यातनाओं को सहन करना पड़ता है। मिस्टर ए.की कामुक नजरों से तंग आकर अलका नौकरी छोड़ना चाहती है। वह ऐसा विचार भी व्यक्त करती है - "बहुत जल्दी इस दफ्तर की नौकरी छोड़कर जानेवाली हूं।"[30] मिस्टर ए. अलका को किसी-न-किसी बात पर हमेशा तंग करता है। वह अलका के कंधे पर हाथ रखकर जोर से दबाता है। मिस्टर ए. अलका का मानसिक और शारीरिक शोषण करता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में नारी शोषण दिखाई देता है। बकुल और शेफाली का दो साल से प्रेम-संबंध है। बकुल हर बार शेफाली के पास प्यार का शेयर मांगता है। बकुल दो साल से शेफाली का शारीरिक शोषण करता है। राजनीति में स्वार्थ साधने के लिए वह शेफाली से विवाह भी करना चाहता है। बकुल शेफाली को प्यार के मोहजाल में फंसाकर शारीरिक शोषण करता है, यह निम्न उध्दरण से अभिव्यक्त होता है -

" बकुल - कहो, क्या जानती हो ? अपने सिवाय तुम किसी दूसरे को क्या जान सकती हो ? कभी- कभी तो लगता है, तुम्हारे शरीर में लहु की जगह भी तुम्हारे पहाड जितने अहं ने ले ली है ... तुम दूसरे किसी को क्या जान सकोगी ?

शेफाली - मुझे जानना चाहिए .... और कुछ नहीं तो तुम्हारी मुझ पर असीम कृपा

रही है, उसके बारे में जरूर जानना चाहिए मुझे .... तुम्हारे लबालब होठों के चुम्बन .... बरसों प्यार के कोहरे में चलते रहनेवाले पुरजोर वे अलिंगन ... सब जैसे मुझ पर बरसाए जानेवाले उपकारों के फूल थे।''[31]

प्रेमभावना का प्रयोग कर लफंगा बकुल शेफाली का यौन शोषण करता है ।

4.1.5.6 स्वाभिमानी नारी : -

स्त्री के पास स्वाभिमान होना बडी गौरव की बात है। आज की शिक्षित नारी का स्वाभिमान जाग उठा है। वह स्वंय किसी के अधीन रहना नहीं चाहती। स्त्री को अपना स्वाभिमान जताने के लिए चाहे कितना भी संकट उठाना क्यों न पड़ें, वह किसी भी कीमत पर अपने स्वाभिमान को ठेंस नहीं पहुंचा देती । आजकल की नारी 'स्व' के प्रति सजग होकर स्वतंत्रता से विचरण करने लगी है ।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक में शेफाली स्वाभिमानी नारी के रूप में चित्रित है । शिक्षा लेते समय हरिजनों के लिए मिलनेवाली रियायत स्वीकारने के लिए शेफाली अपने आपको मजबूरी समझती है । शेफाली का स्वाभिमान निम्न उध्दरणसे स्पष्ट होता है - '' बचपन से लेकर अब तक घर से बाहर हर कदम पर रियायत ही रियायत सामने रखी मिली .... हमें सिर्फ स्वीकारना होता था यह कहकर कि हम हरिजन हैं, ... स्कूल में पढ़ते थे तो खाना, कपडा, कॉपी, किताब ... सब पर रियायत .. बल्कि सब मुफ्त .... सिर्फ कह भर दो कि ' हम हरिजन है ' यह दूसरे लोग क्या होते होंगे .... मैं अक्सर सोचती ...शायद ' जनहरि ' होते होंगे.....स्कूल में कभी किताबें बंटती, कभी मुफ्त ऊन मिलती, कभी वर्दी का कपडा.. लेकिन हम तीनों बहने कोई रियायत न लेती ... हम क्यों कहे कि हम हरिजन है ? यह ' जनहरि' लड़कियाँ क्या हमसे कोई ज्यादा है ?''[32] शेफाली के व्यक्तित्व में स्वाभिमान कूट - कूटकर भरा हुआ है । इसलिए वह किससे रियायत नहीं लेना चाहती ।

बकुल सहायता करने का लालच दिखाकर शेफाली को झूठे प्यार के मोहजाल में फंसाना चाहता है । लेकिन शेफाली सहायता स्वीकारना मजबूरी समझती है । यह निम्न उध्दरण से स्पष्ट होता है -

'' बकुल - शेफाली, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता क्या ?

शेफाली - मेरी मदद ? इस वक्त? हां, कर सकते हो... मुझे किसी तकल्लुप में न डालो .. इस वक्त या कभी भी।''[33] शेफाली अपनी स्वाभिमानी प्रवृत्ति के कारण किसी से सहायता लेना नहीं चाहती।

लफंगा बकुल शेफाली के साथ विवाह करना चाहता है, क्योंकि उसे दलितों के प्रति सहानुभूति दिखाकर जनता से वोट मांगने हैं। इसलिए वह शेफाली को लालच दिखाता है। आत्मसम्मानभरी शेफाली हीन राजनीति के लिए अपने पवित्र प्रेम का त्याग करना नहीं चाहती। वह अपना स्वाभिमान जताने के लिए बकुल के साथ विवाह करने सें इंकार कर देती

है। परिस्थितिवश शेफाली का विवाह बकुल से करना शेफाली की मां को पसंद था, लेकिन स्वाभिमानी शेफाली, मां के आदेश भी ठुकरा देती है। यह निम्न उध्दरण से स्पष्ट होता है -

'' मां - तू अपना खून क्यों जलाती है... वे जैसे हैं वैसे ही रहने दे उन्हें...
हम गरीब लोग हैं ...

शेफाली - हां - हां, हम गरीब लोग हैं, कुसूरवार है, निचली जात है, हमें उनके पांव पडकर माफी मांगनी चाहिए .. हुजूर, हमें माफ कर दीजिए ... हमारी बेटी की जगह अब सिर्फ आप के बेटे के चरणों में है ... अब यह सिर्फ आपके घर में समा सकती है। दुष्ट ! नीच ! पाखण्ड़ी ! जैसा बाप, वैसा बेटा!''[34] शेफाली बकुल के साथ विवाह के लिए इंकार करके, अपने निर्णय पर अड़िग रहती है। वह अपना स्वाभिमान जगाते समय आक्रोश व्यक्त करती है।

4.1.5.7 नौकरी पेशा नारी :-

आजकल की नारी पहले जैसी नहीं रह गई। आधुनिक भारत में ऐसा एक क्षेत्र नहीं रह गया है, जहां नारी का पदार्पण न हुआ हो। आज नारी सामान्य से लेकर उच्चतम पदों पर आरूढ़ है। पुलिस और सेना में भी नारी अपनी कार्यक्षमता और अद्‌भुत योग्यता का परिचय दे रही हैं। हमारी सामाजिक चेतना और मानसिकता से जैसे - जैसे मध्यकालीन सामंती विचार और मान्यताएँ निकलकर नवीन, वैज्ञानिक एवं समानतावादी आधुनिक चेतनाएँ विकास करती जा रही हैं, वैसे-वैसे जीवन के व्यवहार क्षेत्रों में नारी का महत्त्व भी बढ़ता जा रहा है। कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में नौकरी पेशा नारी का चित्रण किया है।

कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में महिला कालेज की लेक्चरर मिसिज दानी, मिसिज पंत, मिसिज मंगला और मिस सिंह नौकरी पेशा नारी के रूप में चित्रित हैं। मिस सिंह तो अविवाहित हैं, लेकिन नौकरी करते हुए समाज कार्य भी करती है। मिस सिंह हमेशा अन्याय के विरोध में लड़नेवाली नारी है। यह निम्न संवाद से स्पष्ट होता है -

" मिसिज दानी - और आपका ? आपका हित क्या हर समय त्रिशुल हाथ में लिए रहने में ही है ? उस दिन क्या हुआ था जब स्टाफ काउंसिल की मीटिंग में कालेज कर्मचारियों का पक्ष लेकर आप...

मिस सिंह - ओऽम् शांति शांति नहीं कह सकीं... आपकी तरह। ...सिर्फ अपने मान-अपमान की बात हो या व्यक्तिगत लाभ-हानि की - तो सभ्यता की हर ऊंचाई को छुआ जा सकता है, लेकिन विद्यार्थियों के हित और कर्मचारियों की आवाज पर बरफ रखते देखकर शांति शांति का जगह हमारे मुंह से तो जबरन 'शेम-शेम' निकलता है।"[35]

मिस सिंह विद्यार्थियों और कर्मचारियों का पक्ष लेकर लड़नेवाली नारी है।

मिसिज दानी ऐसीं लेक्चरर है, नौकरी सिर्फ मन बहलाव के लिए करती है। अपने कर्तव्य के प्रति कुछ भी उत्तरदायित्व नहीं है। आधुनिक नारी में आये हुए परिवर्तन को कुसुम कुमार ने अपने नाटकों में चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में नौकरी पेशा नारी का चित्रण मिलता है। प्रस्तुत नाटक में अलका नौकरी पेशा नारी के रूप में चित्रित है। अलका 'पे ॲण्ड अकाउण्टस् ऑफिस' में टाइपिस्ट हैं। अलका को अपने सहकर्मियों द्वारा मानसिक यातनाओं को सहन करना पड़ता है। वह सहकर्मियों की कामुक नजरों से तंग आकर नौकरी छोड़ना चाहती है। अलका कहती है - "बहुत जल्दी इस दफ्तर की नौकरी छोड़कर जानेवाली हूं।"[36] नौकरी पेशा नारियों को अनेक यातनाओं का सामना करना पड़ता है। जिससे सहकर
वह नौकरी करती है।

4.1.5.8 उत्तरदायित्वहीन नारी :-

वर्तमान युग में शिक्षा के कारण नारी जीवन में काफी परिवर्तन आ गया। प्रो.मानचंद खंडेला के मतानुसार - "नारी स्वतंत्र होने के स्थान पर पहले से अधिक घुटन व स्वयं को भ्रमित महसूस कर रही है। अधिक आधुनिक प्रगतिवादी व स्वतंत्र कही जानेवाली महिलाएँ सिगरेट, शराब पीने, नाईट क्लबों में जाने अविवाहित रहने, जरा-सी बात पर विवाह विच्छेद कर लेने, बच्चों से परहेज करने, शारीरिक श्रम से दूर रहने, स्वजनों से रिश्ते काट लेने, शरीर का खुला प्रदर्शन करने की मानसिकता से ग्रसित होती जा रही है।"[37] आज कल की पढ़ी-लिखी नारी स्वच्छंदी, उच्छृंखल जीवन व्यतीत करने लगी है। फलस्वरूप उसे किसी बात की जिम्मेदारी नहीं है। वह गैर जिम्मेदाराना व्यवहार करती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक 'ओम् क्रांति क्रांति' में लेक्चरर मिसिज दानी, मिसिज बुखारी और महिला कालेज की प्रिंसिपल उत्तरदायित्वहीन नारी के रूप में चित्रित हैं। प्रस्तुत नाटक में मिसिज दानी उत्तरदायित्वहीनता से व्यवहार करती है। मिसिज दानी कक्षा में जाते समय देरी से जाती है। कक्षा में सिर्फ टाईम-पास करके चली जाती है। यह निम्न वार्त्तालाप से स्पष्ट होता है -

" मिना - चार मिनट के पीरियड में मिसिज दानी दस मिनट दायें और बीस मिनट बायें रखती हुई कुल पंद्रह मिनट हाथ में रखती है हमारे और वह भी ...

अनू - कभी बातचीत में, कभी अपनी प्रशंसा में, कभी उल्टे - सीधे व्याख्यानों में लगाकर चली जाती हैं।"[38] मिसिज दानी कर्तव्य भ्रष्ट, कामचोर नारी है।

महिला कालेज की लेक्चरर मिसिज बुखारी भी उत्तरदायित्वहीन नारी के रूप में चित्रित है। मिसिज बुखारी के बारे में मीना कहती है - "नहीं थैलमा, क्लास तो मिसिज बुखारी की भी हमेशा खाली ही मिलती है। इसके जवाब में अनू कहती है - ओ हो यार ! वो भी तो इन्हीं की बहन है?"[39] मिसिज दानी की तरह लेक्चरर मिसिज बुखारी भी उत्तरदायित्वहीन नारी है ! भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी और बुखारी ने अपने मनचाहे कारोबार से पूरे महिला कालेज में अराजकता फैला दी है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् कांति क्रांति ' नाटक में चित्रित प्रिंसिपल उत्तरदायित्वहीन नारी है। प्रस्तुत नाटक में महिला कालेज की प्रिंसिपल भ्रष्ट लेक्चररों का पक्ष लेकर विद्यार्थियों पर अन्याय करती है। विद्यार्थियों द्वारा मिसिज दानी के विरोध में किए गए आंदोलन में प्रिंसिपल पक्षपाती नीती का समर्थन करते हुए मेनका और थैलमा को कालेज से रस्टीकेट कर देती है। प्रिंसिपल कहती है - "अपराध जो था वो बता दिया, तुम्हें और थैलमा रोंबिसन को कालेज से रस्टीकेट किया जाता है।"[40] प्रिंसिपल अपनी कर्तव्यभावना को भूलकर विद्यार्थियों पर अन्याय करती है। यह उसकी बात उनके उत्तरदायित्वहीनता को दर्शाती है।

4.1.5.9 नेतृत्त्व करनेवाली नारी :-

आधुनिक काल में शिक्षा के कारण नारी जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आ गया। आजकल की शिक्षित नारी सभी स्तरों पर नेतृत्त्व कर रही है। आज नारी नेतृत्व करने में पुरूष से भी आगे है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद विभिन्न क्षेत्रों में जैसे - शिक्षा, चिकित्सा, सामान्य रोजगार, प्रशासनिक सेवा, सामाजिक सेवा, राजनीति, पुलिस व सेना आदि क्षेत्रों में महिलाएँ नेतत्व कर रही है। हर क्षेत्र में नेतृत्व की दृष्टि से नारी ने अपनी अमीठ छाप अपने-अपने क्षेत्रों में छोड़ी है।

नाटककार कुसुम कुमार ने 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में नेतृत्त्व करनेवाली नारी का यथार्थ चित्रण किया है। शिक्षा-व्यवस्था में आयी हुई अव्यवस्था को हटाने के लिए कुसुम कुमार ने सामूहिक रूप से की गयी क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। किसी भी क्रांति के लिए संगठन और नेतृत्व की जरूरत होती है। प्रस्तुत नाटक में चित्रित थैलमा छात्र - आंदोलन का नेतृत्व करती है। महिला कालेज की भ्रष्ट लेक्चररों के विरोध में आवाज उठाने के लिए थैलमा अपनी सहेलियाँ और छात्राओं को संगठित करती है। थैलमा छात्राओं को क्रांति के लिए प्रेरित करती हुई कहती है - "मेनका, तू यों गुमसुम हुई क्यों बैठी है? कागज निकाल ... चल प्रिंसिपल के नाम एक पत्र लिखते हैं। सब लड़कियाँ उस पर हस्ताक्षर करेगी ... देख... लेंगे... जो होगा देख लेंगे।"[41] सभी लड़कियाँ संगठित होकर भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध में आवाज उठाती हैं। इस क्रांति में सफल होती हैं। छात्र आंदोलन का नेतृत्व करनेवाली थैलमा में निड़रता साहस तथा नेतत्व गुण होने के कारण क्लासरूम क्रांति में सफल होती दिखायी देती है।

4.1.5.10 दायित्व वहन करनेवाली नारी :-

आजकल की नारी अपने कर्त्तव्य को अधिक दायित्वबोध से निभा रही है। अपने दायित्व वहन करने में नारी पुरूषों से भी आगे निकल रही है। इस संदर्भ में डॉ.रामेश्वरनारायण 'रमेश' का मत दृष्टव्य है- "अधिकतर पढ़ी लिखी स्त्रियां आवश्यकता पड़ने पर कुटुंब को आर्थिक दृष्टि से मुक्त करने के लिए ही नहीं यों भी नौकरी करना चाहती हैं। यह एक नवीन जीवनदृष्टि है जिसके अंतर्गत आज की नारी नहीं चाहती कि उसे परावलंबी की तरह जीना पड़े अपने पैरों पर खडे होने की आकांक्षा ने स्त्रियों को व्यापक स्तर पर अध्यवसायी की ओर प्रेरित किया। इस क्रम में उन्हें

पुरूष से भी अधिक सामाजिक दायित्व का वहन करता पड़ता है। पुरूष तो आजीविका अर्जित ही करना है, जब स्त्री न केवल नौकरी करती है बल्कि बच्चे भी जनती है, उसका पोषण भी करती है और घर भी संभालती है। इसमें संदेह नहीं कि आर्थिक स्वतंत्रता या स्वावलंबन की भावना ने आज की नारी को परिवार की योजनाओं, बच्चों के भविष्य समृध्दि के विस्तार आदि के संबंध में निर्णय लेने के अधिकार के प्रति सजग है।"[42] आजकल की नारी पारिवारिक और सामाजिक दायित्व वहन करने में अपने आपको सार्थक समझने लगी है। नारी अपने वैयक्तिक लाभ-हानि का विचार न करके दायित्व के प्रति एकनिष्ठ है। वह अपना दायित्व वहन करने में ही सुख पाती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में दायित्व वहन करनेवाली नारी का चित्रण मिलता है। प्रस्तुत नाटक में महिला कालेज की लेक्चरर मिसिज पंत अपने कर्तव्य के प्रति सजग है। मिजिस पंत विद्यार्थियों की प्रशंसा करके उन्हें प्रेरित भी करती है। मिसिज पंत भ्रष्ट लेक्चरर मिसिज दानी के विरोध में लड़ने के लिए छात्राओं को प्रेरित करती है। यह निम्न उध्दरण से अभिव्यक्त होता है -

" मिसिज पंत - उल्टी बात यूं कि क्लास में मैं पोपुलर नहीं, क्लास मेरे साथ पोपुलर है ... सब लड़कियाँ तो सचमुच जेम हैं ... उन्हें बस थोडी - सी गायडैंस चाहिए क्लास में ... और क्लास के बाहर भी।

मिसिज दानी - हऽऽम ... क्लास के अंदर गायडैंस देने की बात तो कुछ - कुछ समझ में आती हैं मिसिज पंत, लेकिन यह क्लास से बाहर उन्हें को ... ई ... कै ... से गाइड कर सकता है ?"[43] मिसिज पंत एक लेक्चरर होने के नाते सिर्फ पढ़ाई काम नहीं करती, उसके साथ अपने भ्रष्ट सहकर्मियों के विरोध में लड़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित भी करती है। मिसिज पंत अपना दायित्व वहन करने में सफल दिखायी देती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक में शेफाली की मां दायित्व वहन करनेवाली नारी के रूप में चित्रित है। पति बीमार होने के कारण शेफाली की मां अकेली घर संभालती है। मिस साहब के यहां नौकरी करके पति की बीमारी में सेवा करना, बेटियों का शिक्षा का खर्च अकेली वहन करती है। शेफाली की मां को एक ही चिंता है, अपनी बेटियों का विवाह करना। मां को अपनी बेटियों के विवाह करके जिम्मेदारी से मुक्त होना है। इसलिए वह कहती है - "मुझे किसी की चीज का लालच नहीं... लेकिन तुम तीनों को बारी-बारी विदा करने का तो लालच है ?"[44] शेफाली की मां शेफाली का विवाह बकुल से करना चाहती थी, लेकिन बकुल की स्वार्थनीति के कारण शेफाली विवाह के लिए इंकार कर देती है। आखिर शेफाली की मां किरन का विवाह बकुल से करके अपनी जिम्मेदारी को निभाती है। प्रस्तुत नाटक में शेफाली की मां दायित्व वहन करनेवाले रूप में चित्रित है।

4.1.5.11 विद्रोही नारी -

आज की नारी अपने अधिकार और कर्तव्य को अच्छी तरह से समझती है। इसी कारण आज समाज में परंपरागत रूप से चलती आयी रूढ़ियों के विरोध में उसने अपनी आवाज उठायी है। उसका यह विद्रोह अपने प्रति होनेवाले अन्याय को दर्शाता है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम क्रांति क्रांति' नाटक में महिला कालेज की लेक्चरर मिस सिंह विद्रोही नारी के रूप में चित्रित है। मिस सिंह हमेशा अन्याय के विरोध में लड़ती है। मिस सिंह अपनी सहकर्मी भ्रष्ट प्राध्यापिका मिसिज दानी के विरोध में विद्रोह करने के लिए छात्राओं को प्रेरित करती है। मिस सिंह हमेशा क्रांति का पक्ष लेती है। यह निम्न उध्दरण से स्पष्ट होता है -

" ओम् शाति शंति नहीं कह सकीं... आपकी तरह।... सिर्फ अपने मान-अपमान की बात हो या व्यक्तिगत लाभ-हानि की तो सभ्यता की हर उँचाई को छुआ जा सकता है, लेकिन विद्यार्थियों के हित और कर्मचारियों की आवाज पर बरफ रखते देखकर शांति - शांति की जगह हमारे मुंह से तो जबरन 'शेम-शेम' निकालता है।"[45] मिस सिंह हमेशा क्रांति का पक्ष लेकर अन्याय के विरोध में विद्रोह करती है। कुसुम कुमार ने प्रस्तुत नाटक में महिला कालेज की छात्राएँ मेनका, अनू, थैलमा और मीना को विद्रोही रूप में चित्रित किया है। ये छात्राएँ महिला कालेज में फैली अराजकता, भ्रष्ट शिक्षकों के विरोध में आवाज उठाती हैं। यह निम्न उध्दरण से स्पष्ट होता है -

" थैलमा - टीचर को ? मैडम प्रिंसिपल... और टीचर को अन्याय का परिणाम क्या नहीं पता होना चाहिए ?

मिसिज दानी - चुप रहो बदतमीज नालायक लड़की।

पूरी क्लास - नहीं मैम, अब चुप नहीं रहेंगे। आज आप भी सुन लीजिए ...।"[46] महिला कालेज की छात्रा थैलमा और मेनका को कालेज से रस्टीकेट होना पड़ता है। अपनी त्यागी, जिद्दी, दृढ़ निश्चयी विशेषताओं के कारण छात्राएँ विद्रोह में सफलता पाती हैं।

स्वाभिमानी नारी अन्याय के विरोध में विद्रोह करती है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'सुनो शेफाली' नाटक की नायिका शेफाली विद्रोही नारी के रूप में चित्रित है। बकुल और शेफाली का दो साल से प्रेम संबंध है। बकुल स्वार्थनीति को अपनाकर शेफाली से प्यार करता है। शेफाली एक भोली-भाली किंतु स्वाभिमानी लड़की है। सत्यमेव दीक्षित को चुनाव में जीतकर मंत्री बनना है। इसलिए वह अपने बेटा बकुल का विवाह हरिजन युवती शेफाली से करना चाहता है। हरिजनों के प्रति सहानुभूति दिखाकर उसे जनता से वोट प्राप्त करना है। जब शेफाली बाप-बेटे को स्वार्थनीति को जान लेती है तब वह विवाह के लिए इंकार कर देती है। शेफाली कहती है कि " तू क्या उन्हें इतना भोला समझती है, अम्मा ? वह क्यों शादी करना चाहते हैं मुझसे अभी... इसी वक्त ... मैं खूब समझती हूं ... बाप-बेटा अपनी समाजसेवा की हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं ... एक हरिजन लड़की का उध्दार किया उन्होंने - यही कह - कहकर अपने लिए जिन्दाबाद के नारे

लगवाएंगे ... और मैं ? उनके विज्ञापन का वाक्य बनीं...।"[47] शेफाली शिक्षित, सजग लड़की है। इसलिए वह पाखंडी नेताओं के विरोध में विद्रोह करती है। शेफाली बकुल से प्रतिशोध लेना चाहती है। यह शेफाली के स्वगत प्रलाप द्वारा स्पष्ट होता है - "बकुल जी ... बकुल बाबू... आप भी याद करेंगे - एक हरिजन लड़की का सिखाया हुआ पाठ पूरी उम्र बैठकर रटते न रहं जाएँ तो मेरा नाम भी शेफाली नहीं।"[48] शेफाली के शब्दों में अंत तक विद्रोह की आग निकलती है। शेफाली का विद्रोही रूप पाठक, दर्शक नहीं भूलते।

निष्कर्ष :-

नारी मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक घटक है। वर्तमान युग के साहित्य की हर विधा में नारी जीवन के विविध रूप, नारी की संवेदना आदि का प्रतिबिंब नजर आता है। हिंदी नाटकों में नारी जीवन के विभिन्न आयाम लिखाई देते हैं। कुसुम कुमार के नाटकों में नारी का चित्रण विविध रूपों में दिखाई देता है।

कुसुम कुमार ने ' ओम् क्रांति क्रांति ', ' सुनो शेफाली ', और ' दिल्ली उँचा सुनती है ' इन नाटकों में नारी के माता के रूप में दया, क्षमा, ममता, स्नेह आदि का यथार्थ चित्रण किया हुआ नजर आता है। माता अपने संतान के प्रति अटूट कर्तव्य बंधनों के कारण ही वह अपना अस्तित्व बनाये रखती है। आदर्श माता आपनी संतानों के लिए हमेशा मार्गदर्शिका होती है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में जोशी आंटी आदर्श माता के रूप में चित्रित है। 'सुनो शेफाली' नाटक में शेफाली की मां एक सहज वात्सल्य एवं त्यागमयी जननी है।

भारतीय संस्कृति में नारी के पत्नी रूप का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। विधाता नें नारी को पुरूष के पूरक रूप में बनाया है, इसलिए नारी को अर्धांगिनी कहा जाता है। कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित नारी का पत्नी रूप पतिधर्मपरायण रूप में प्रस्तुत है।

कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित बहनें अपनी 'स्व' रक्षा के लिए अपने निश्चय पर अड़िग रहती हुई दिखाई देती है। कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित नारी के कन्या रूप में चित्रित नारी, वैयक्तिक धरातल पर परिवार, प्रेमी के विरोध में संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में मेनका एक आदर्श कन्या के रूप में चित्रित है। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में चित्रित कन्या रूप पाठकों, दर्शकों में करूणा जगानेवाला है। नारी के अन्य रूप में विद्रोही प्रेमिका अपना स्वाभिमान जताने के लिए प्रेमी के विरोध में विद्रोह कर बैठती है।

कुसुम कुमार ने अपने नाटक 'सुनो शेफाली' और 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' में नारी को नायिका रूप में चित्रित किया है। जिनका कथा विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है।

शिक्षा के कारण नारी अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति सज़ग होकर अपनी सत्व की रक्षा के लिए साहस से काम कर रही है। कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में साहसी नारी का रूप विशेष उल्लेखनीय है। जो आज की नारी को पथ प्रदर्शन करनेवाला है।

त्याग ही नारी की सबसे बड़ी देन है। नारी पति, परिवार, समाज के लिए अपने आपको न्योछावर कर देती है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में शेफाली की मां त्याग की प्रतिमूर्ति है, जो अपने पति, परिवार के लिए कष्ट उठाती है।

आज की शिक्षित नारी का स्वाभिमान जाग उठा है। स्त्री को अपना स्वाभिमान जताने के लिए समाज, परिवार, प्रेमी के विरोध में संघर्ष करना पड़ रहा है। 'सुनो शेफाली' नाटक में स्वाभिमानी शेफाली अपने परिवार तथा प्रेमी के विरोध में संघर्ष करती हुई नजर आती है।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में चित्रित नौकरी पेशा नारी एक ओर अपने कर्तव्य के प्रति एकनिष्ठ है, तो दूसरी ओर कर्तव्यभ्रष्ट, अनुशासनहीन नारी के रूप में चित्रित है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में मिसिज पंत, मिस सिंह आदर्श लेक्चरर के रूप में चित्रित है, तो दूसरी ओर मिसिज दानी कर्तव्यभ्रष्ट नौकरी पेशा नारी के रूप में भी चित्रित की गई है।

आज कल की शिक्षित नारी सभी स्तरों पर नेतृत्व कर रही है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में थैलमा नेतृत्व करनेवाली नारी के रूप में चित्रित है। छात्र-आंदोलन का नेतृत्व करनेवाली थैलमा एक निडर, साहसी रूप में चित्रित है।

कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' और 'सुनो शेफाली' नाटक में नारी का विद्रोही रूप भी दिखाई देता है। कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में चित्रित केवल कैंटीन बॉय को छोड़कर सभी के सभी पात्र नारी पात्र हैं। यह विशेषता केवल कुसुम कुमार के प्रस्तुत नाटक में ही पायी जाती है।

संदर्भ सूची

अं.क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रं.
1.	डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश '	' साहित्य में नारी : विविध संदर्भ '	14
2.	डॉ.रामसुंदर लाल	' प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान '	21
3.	डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश '	' साहित्य में नारी : विविध संदर्भ '	14
4.	डॉ.मानचंद खंडेला	' महिला सशक्तिकरण '	14
5.	प्रेमचंद	' गोदान '	178
6.	डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश '	' साहित्य में नारी : विविध संदर्भ '	28
7.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति	16
8.	डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश '	' साहित्य में नारी : विविध संदर्भ '	40
9.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	61
10.	वही	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	29
11.	घनश्याम भुतडा	' समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रूप '	110
12.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	62
13.	वही	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	17
14.	डॉ.जे.एम.देसाई	' आधुनिक हिंदी काव्य में नारी '	14
15.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	32
16.	वही	' सुनो शेफाली '	62
17.	डॉ.गणेश दास	' स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नारी के विविध रूप '	92, 93
18.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	16
19.	वही	वही	19
20.	वही	' सुनो शेफाली '	36
21.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	62
22.	डॉ.हरिशंकर शर्मा	' हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी '	110
23.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	60
24.	मानचंद खंडेला	' महिला सशक्तिकरण '	13
25.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	24
26.	वही	वही	79
27.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	36
28.	डॉ.हरिशंकर शर्मा	' हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी '	194

29.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	62
30.	वही	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	42
31.	वही	' सुनो शेफाली '	35
32.	वही	वही	32
33.	वही	वही	34
34.	वही	वही	61
35.	वही	' ओम् क्रांति क्रांति '	60
36.	वही	' दिल्ली ऊँचा सुनती है '	42
37.	मानचंद खंडेला	' महिला सशक्तिकरण '	14
38.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	41
39.	वही	वही	41, 42
40.	वही	वही	78
41.	वही	वही	74, 75
42.	डॉ.रामेश्वरनारायण ' रमेश '	' साहित्य में नारी : विविध संदर्भ '	134, 135
43.	कुसुम कुमार	' ओम् क्रांति क्रांति '	52
44.	कुसुम कुमार	' सुनो शेफाली '	62
45.	वही	' ओम् क्रांति क्रांति '	60
46.	वही	वही	वही
47.	वही	' सुनो शेफाली '	58
48.	वही	वही	63